कानून में करियर

कानून के क्षेत्र में लोगों का अब खूब नौकरियां मिल रही हैं। देश में अदालतें बेशक कम हों, लेकिन मुकदमों की तादाद लगातार बढ़ती ही जा रही है। इसीलिए दिन ब दिन वकीलों की मांग भी बढ़ती जा रही है। देश का कानून इतना व्यापक है कि स्पेशलाइजेशन की जरूरत बढ़ जाती है। बिल्कुल मेडिकल फील्ड की तरह। आप अपनी रुचि के अनुसार किसी विशेष क्षेत्र के कानून के विशेषज्ञ के रूप में पहचान बना सकते हैं। यह क्षेत्र एडमिनिस्ट्रेटिव लॉ, कॉन्सटिट्यूशन लॉ, फैमिली लॉ, इंटरनेशनल लॉ, साइबर लॉ, लेबर लॉ, पेटेंट लॉ, एन्वायरन्मेंट लॉ, टैक्स लॉ आदि में से कुछ भी हो सकता है। ग्लोबल होती आज की दुनिया में आज इन सभी क्षेत्रों में कानून के विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती है। कोर्ट में अपनी प्रैक्टिस के अलावा, केंद्र व राज्य सरकार की जॉब्स, टीचिंग, कॉरपोरेट कंपनियों में लीगल एडवाइजर के रूप में भी करियर बनाया जा सकता है। वित्तीय संकट के चलते कानूनी अड़चनों से निपटने के लिए भी लोग अब लीगल एक्सपर्ट की मदद लेने लगे हैं। इन दिनों लीगल एक्सपर्ट की मांग न केवल भारत में, बल्कि दुनिया के दूसरे मुल्कों में भी लगातार बढ़ रही है। कॉरपोरेट वर्ल्ड में लीगल सर्विसेज का दायरा बढने से इसे आकर्षक करियर के रूप में भी देखा जा रहा है। अगर आपको चुनौतियां पसंद हैं, तो यह आपके लिए बिल्कुल सही करियर साबित होगा। इससे आपको प्रतिष्ठा भी मिलेगी और पैसा भी।

★ कैसे मिलेगी एंट्री

10+2 के बाद लॉ की पढ़ाई शुरू की जा सकती है। कई यूनिवर्सिटीज और प्राइवेट कॉलेजों में पांच वर्षीय बीए एलएलबी कोर्स कराया जाता है। अगर आप ग्रेजुएट हैं, तो तीन वर्षीय एलएलबी कोर्स के बाद इस क्षेत्र में करियर शुरू कर सकते हैं। एंट्रेंस एग्जाम में बैठने के लिए 10+2 में कम से कम 55 प्रतिशत अंक होने चाहिए। देश के विभिन्न 'नेशनल लॉ स्कूल्स' में एडमिशन 'कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट' (सीएलएटी) के माध्यम से होता है। अन्य संस्थान लॉ कोर्सेज के लिए अलग-अलग एंट्रेंस एग्जाम्स आयोजित करते हैं। 'कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट' में आमतौर पर इंग्लिश, लॉजिकल रीजनिंग, लीगल रीजनिंग, मैथमेटिक्स और जनरल नॉलेज से जुड़े सवाल पूछे जाते हैं। अगर आप विदेश जाकर लॉ की पढ़ाई करना चाहते हैं, तो वहां एडमिशन की प्रक्रिया अलग हो सकती है।

★ करियर ऑप्शन...

इन दिनों शायद ही कोई ऐसी कंपनी हो, जहां लीगल एक्सपर्ट की जरूरत न होती हो! हर बड़े ऑगर्नाइजेशन में लीगल डिपार्टमेंट होता है, जिसमें वकीलों की अपनी एक टीम होती है। खासकर, बड़ी कंपनियों में अधिग्रहण, विलय, विवाद आदि से निपटने के लिए लीगल एडवाइजर या वकील को आकर्षक सैलरी पैकेज पर ही रखा जाता है। कुछ खास क्षेत्र, जहां आपको मिल मिल सकता है करियर ऑप्शन...

➢ **वकालत** : एडवोकेट के लिए प्राइवेट और सरकारी दोनों तरह के ऑगर्नाइजेशन में काम करने का मौका मिलता है। एडवोकेट को कानूनी विवाद आदि सुलझाने के लिए रखा जाता है। बड़ी कंपनियों में तो जब भी कोई बड़े नीतिगत फैसले लिए जाते हैं , तो पहले लीगल ओपिनियन लेने की परंपरा सी बन गई है। इसके अलावा , असिस्टेंट पब्लिक प्रॉसिक्यूटर और पब्लिक प्रॉसिक्यूटर के पदों पर भी एडवोकेट्स की नियुक्तियां होती हैं।

➢ **ज्युडिशियरी** : अदालतों में कानूनी मामलों की संख्या लगातार बढ़ती इसलिए भी जा रही है , क्योंकि हर मामले में दोनों तरफ से मुकदमा लडने के लिए वकील चाहिए और इसके साथ ही चाहिए ज्यादा जज भी। इसे देखते हुए ज्युडिशियरी का विस्तार होना करीब - करीब तय है , ताकि मामलों का निपटारा समय से हो सके। जजों की भर्ती सरकार हाईकोर्ट के माध्यम से करती है।

➢ **टीचिंग** : इन दिनों लॉ कॉलेज की संख्या में भी लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इसीलिए लॉ टीचर्स की मांग भी तेजी से बढ़ी है। इस क्षेत्र में टीचिंग आप दो आधार पर कर सकते हैं।
फुल - टाइम और पार्ट - टाइम। पार्ट - टाइम में आप प्रैक्टिस और टीचिंग दोनों साथ - साथ कर सकते हैं।

➢ **आउटसोर्सिंग** : लीगल क्षेत्र में अब काफी काम आउटसोर्सिंग के जरिए भी होने लगा है। यहां काम अमूमन दो तरह से हो सकते हैं ...
१ अपनी नेटवर्किंग के जरिए
२ ऑउटसोर्सिंग एजेंसी के साथ जुड़ कर

➢ **लीगल एडवाइजर** : लीगल एडवाइजर की इन दिनों खूब डिमांड देखी जा रही है। एडवाइजर का काम भी दो स्तरों पर होता है : पार्ट-टाइम और फुल-टाइम। पार्ट-टाइम एडवाइजर को किसी संस्था द्वारा खास मकसद के लिए हायर किया जाता है। इसके लिए लीगल एडवाइजर को एक निश्चित राशि दी जाती है और फिर केस- टु- केस अलग से भुगतान किया जाता है।

➢ **कॉरपोरेट लॉयर** : यह लीगल फील्ड का उभरता स्वरूप है। बड़े बिजनेस हाउसेज और सरकारी विभागों को भी कई जटिल कानूनी मामलों का सामना करना पड़ता है। इन्हें हल करने के लिए कॉरपोरेट लॉयर्स की मांग बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इनका काम कंपनी के संचालन में कानूनी नियमों का पालन सुनिश्चित करना, कंपनी से जुड़े मुकदमों की पैरवी करना, कंपनी के लिए कॉन्ट्रैक्ट्स तैयार करना आदि होता है। कॉरपोरेट कंपनियों में मिलने वाले आकर्षक वेतन के चलते युवा इस तरफ आकर्षित हो रहे हैं।

➢ **लॉ फर्म**: फ्रेश लॉ स्टूडेंट्स को अक्सर किसी लॉ फर्म में सीखना का मौका मिल जाता है। अगर वे कड़ी मेहनत से अपनी क्षमताओं को साबित कर सकें, तो वे लॉ फर्म के पार्टनर के स्तर पर भी पहुंच सकते हैं। लॉ फर्म में काम करने वाले युवा फर्म के क्लाइंट्स के हित में काम करते हैं। इन क्लाइंट्स में कंपनियां या इंडिविजुअल्स, कोई भी शामिल हो सकता है।

➢ **लिटीगेशन** : यह शब्द प्राइवेट प्रैक्टिस से जुड़ा है। इस रूप में लॉ प्रोफेशनल का काम अपनी समझ, अनुभव और कानूनी ज्ञान के आधार पर अपने क्लाइंट के मुकदमे की पैरवी करना होता है। सारी बहस का उद्देश्य यही होता है कि किसी तरह जीत हासिल की जाए, क्योंकि इस जीत से न सिर्फ क्लाइंट का लाभ ही नहीं बल्कि एडवोकेट की प्रतिष्ठा भी जुड़ी होती है। इस रूप में काम करने वाले एडवोकेट्स सिविल, क्रिमिनल, कंज्यूमर, फैमिली, लेबर आदि विषयों में स्पेशलाइजेशन कर सकते हैं।

➢ **एलपीओ**: लीगल प्रोसेस आउटसोर्सिंग भारत में अभी नया क्षेत्र है। जाहिर है, इस क्षेत्र में अभी काफी संभावनाएं बाकी हैं। इससे जुड़े लॉ प्रोफेशनल्स विदेशी क्लाइंट्स के लिए यहां रहकर काम करते हैं। कॉमन लॉ के जानकार भारतीय वकील विदेशी क्लाइंट्स के लिए सस्ता विकल्प साबित होते हैं।

★ **स्पेशलाइजेशन**

➢ **सिविल लॉयर** : आमतौर पर सिविल लॉयर संपत्ति, तलाक, कायदा-कानून से जुड़े मामले देखते हैं।
टेक्स लॉयर: इनकम टेक्स, सेल्स टेक्स, एक्साइज ड्यूटी, कस्टम ड्यूटी आदि मामलों की सुनवाई के कामकाज को इन विधाओं के एक्सपर्ट वकील डील करते हैं।

➢ **क्रिमिनल लॉयर**: सभी तरह के अपराधों से संबंधित मामलों की सुनवाई के दौरान इसी तरह की ट्रेनिंग वाले वकीलों की जरूरत पड़ती है।

➢ **लेबर लॉयर** : श्रम से जुड़े मामलों, कंपनियों की स्ट्राइक तथा वेतन से संबंधित मसलों की समस्त अदालती कार्यवाही के लिए प्राय: सभी कंपनियों को लेबर लॉयर की शरण में जाना पड़ता है।

➢ **पेटेंट लॉयर** : आविष्कारक या नई खोज करने वाली कंपनियों के पेटेंट अधिकार सुरक्षित करवाने के अलावा चोरी करने वाले से का ुर्माना दिलवाने के लिए कोर्ट में लडऩा इनके दायित्वों में आता है।

➢ **साइबर लॉयर** : साइबर क्राइम्स की बढ़ती वारदातों के कारण अब हमारे देश में इस तरह के लॉयर की मांग तेजी से बढ़ रही है।

★ **प्रमुख लॉ संस्थान**

➢ नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी, बैंगलुरु
➢ एनएएलएसएआर यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद
➢ नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी, भोपाल
➢ द वेस्ट बंगला नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ जूरिडिकल साइंसेज, कोलकाता
➢ नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, जोधपुर
➢ हिदायतुल्लाह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर
➢ डॉ. राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ
➢ राजीव गांधी नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, पटियाला
➢ चाणक्य नेशलन लॉ यूनिवर्सिटी, पटना
➢ नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एडवांस्ड लीगल स्टडीज, कोच्ची
➢ नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, उड़ीसा
➢ नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडी एंड रिसर्च इन लॉ, रांची
➢ नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी एंड जूडिसियल एकेडमी, असम

★अधिक जानकारी के लिए आप निम्न साइट्स पर विजिट कर सकते हैं...

http://www.nls.ac.in/	National Law School of India -Admissions, centres, student life, academics, faculty, and more.
http://www.nials.ac.in/	National University of Advanced Legal Studies, Kochi
http://www.nujs.edu/	West Bengal National University of Judicial Sciences.
http://www.nalsar.ac.in/	Nalsar University of Law, Hyderabad -Academic and research programmes in law. Located in Hyderabad, India.
http://nusrlranchi.com	National University of Study and Research in Law (NUSRL), Ranchi
http://www.nlujodhpur.ac.in	National Law University, Jodhpur
http://www.tndalu.ac.in	Tamil Nadu Dr. Ambedkar Law University
http://www.armyinstituteoflaw.org	Army Institute of Law (AIL), Mohali, Punjab
http://www.bilpatna.com	Bihar Institute of Law (BIL), Patna
http://law.du.ac.in/	Law Centre - I, Faculty of Law, University of Delhi
http://www.gnlu.ac.in/	Gujarat National Law University
http://www.time4education.com/law/law.htm	Law as a career after 12th